

# सफलता

## की

## कहानी

IWMP- 01 मिलीवाटरशेड कर्तवानाला

विकासखण्ड – बेमेतरा, जिला – बेमेतरा (छ.ग.)

## सफलता की कहानी

### पृष्ठभूमि:-

जिला बेमेतरा अंतर्गत बेमेतरा तहसील में IWMP परियोजनाओं की स्वीकृति वर्ष 2010–11 एवं 2011–12 जिनकी कुल उपचार हेतु 10132 हेक्ट. क्षेत्र की लागत राशि 1215.84 लाख हैं। मिलीवाटरशेड करुवानाला–01 बेमेतरा से दुर्ग रोड पर 15–20 कि.मी. के अंतर्गत 15 ग्रामों में संचालित हैं। जिसे 09 माईक्रोवाटरशेड में विभाजित किया गया है। एवं मिलीवाटरशेड घोरेघाटनाला–02 बेमेतरा से कर्वधा रोड होते हुए दाढ़ी कठौतिया मार्ग पर 20 ग्रामों में 07 माईवाटरशेड में विभाजित कर संचालित किया जा रहा है। परियोजनांतर्गत क्षेत्र में 22400 कुल कृषक परिवार हैं। वाटरशेड क्षेत्र की इन ग्रामों में सिंचित रकबा 8728 हेक्ट.था जिसमें से नलकुप द्वारा 4425 हेक्ट.तथा अन्य स्त्रोतों से 4303 हेक्ट. में सिंचाई होता था जिनमें मुख्य फसले धान (18–20 किव./— हेक्ट.) चना (10–15 किव./—हेक्ट.) अरहर (12–14 किव./—हेक्ट.) सोयाबिन (14–16 किव./— हेक्ट.) उत्पादन होती थी। कृषकों की औसत आय 19375 रु./— हेक्ट. थी।

चूंकि अधिकतर सिंचित रकबा का स्त्रोत नलकूप हैं जिसमें वाटरशेड ग्रामों में भू—जल स्तर 9–12 मी नीचे था। जल क्षेत्र काफी कम होने के कारण एक तरफ सुरक्षित सिंचाई का अभाव था तो दूसरी तरफ नलकूप से एक तरफा भूमिगत जल का दोहन हो रहा था। पेयजल, सिंचाई एवं निस्तारी हेतु जल की गंभीर समस्याएँ बनी रहती थी। उत्पादन अपेक्षाकृत कम था कृषकों द्वारा केवल एक उद्यम (कृषि) अपनाया जा रहा था। उद्यानिकी, मत्त्यपालन एवं पशुपालन उद्यम का अभाव था।

### संभावनाएँ / अवसरः-

वाटरशेड क्षेत्र में एक नाला उपलब्ध है। जिसमें पानी का बहाव वर्षा के दौरान हो रहा था इस नाले में जगह—जगह चेक डेम बनाकर प्रवाहित जल को रोके जाने की संभावनाएँ थी। रबी फसलों के लिए सिंचाई जल उपलब्ध नहीं होता था। कृषि के अलावा अन्य उद्यम जैसें मछली पालन, एवं उत्पादकता वृद्धि की संभावनाएँ थी। कृषकों की समूह निर्माण कर कृषि के अतिरिक्त सब्जी आदि के द्वारा आमदनी में वृद्धि की जा सकती थी।

**किये गये कार्यः—**अभिसरण IWMP+MGNAREGA+ATMA

चूंकी IWMP परियोजनांतर्गत पर्याप्त आबंटन अभाव के कारण अलग—अलग विभागों द्वारा अभिसरण कर कार्यों का पूर्ण किया गया।

### **भू—जल संवर्धनः—**

#### **1. भूमिगत डाईक (संख्या— 05,**

IWMP —1.222 लाख एवं MGNREGA—4.054 लाख कुल लागत राशि 5.276 लाख) इस संरचना के निर्माण होने से भूमिगत जल का बहाव रुकने के कारण ऐसे नलकूप जो UPPER RICHES में स्थापित थे उसमे वर्ष भर जल उपलब्ध हो सके जबकि वाटरशेड एरिया के ग्रामों में नलकूप गर्मीयों में सूख जाते थे। इस संरचना के प्रति ग्रामीणों में विश्वासकायम हआ।



Figure No. 01 Under Ground Dyke

2. परकोलेशन टैंक :— नाला चेक (संख्या —04, IWMP —3.68 लाख एवं MGNREGA—19. 80 लाख कुल लागत राशि 23.48 लाख) परकोलेशन टैंक निर्मित किया गया परकोलेशन टैंक निर्माण से वाटरशेड क्षेत्र मे भूजल स्तर में वृद्धि हुई तथा आसपास के नलकूप के जलस्तर में वृद्धि हुई।



Figure No. 02 Percolation Tank

3. फार्म पौण्डः—(संख्या—15, IWMP—1.67 लाख एवं MGNAREGA-28.53 लाख कुल लागत 30.20 लाख) निर्मित किया गया वाटरशेड क्षेत्र के कृषकों के द्वारा मत्स्य पालन किया जा रहा है। जिससे अतिरिक्त आमदनी अर्जित कर रहे हैं।



Figure No. 03 and 04 Farm Pond (Before and After the Process)

4. नाला चेक डेम:—

वर्ष 2016–17 में निर्मित 04 नाला चेक डेम 36.36 लाख की लागत से IWMP मद से तैयार किया गया है एवं वर्ष 2017–18 में PMKSY(Other Intervention) एवं MGNAREGA अभियान अंतर्गत 7 नाला चेकडेम राशि रु. 111.694 लाख का निर्माण किया गया। जिससे लगे हुए खेतों में 80 कृषकों द्वारा लगभग 110 एकड़ म खरीफ में ही सिंचाई किया गया नाला चेक डेम कृषकों द्वारा और बनाये जाने की मांग किया जा रहा है। उपरोक्त फायदे को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2018–19 में PMKSY(Other Intervention) एवं MGNAREGA अभियान अंतर्गत नाला चेक डेम—8 जिसकी कुल लागत राशि रु. 144.02 लाख स्वीकृत किये जा चुके हैं। जिसमें 4 नाला चेकडेम प्रगतिरत है।

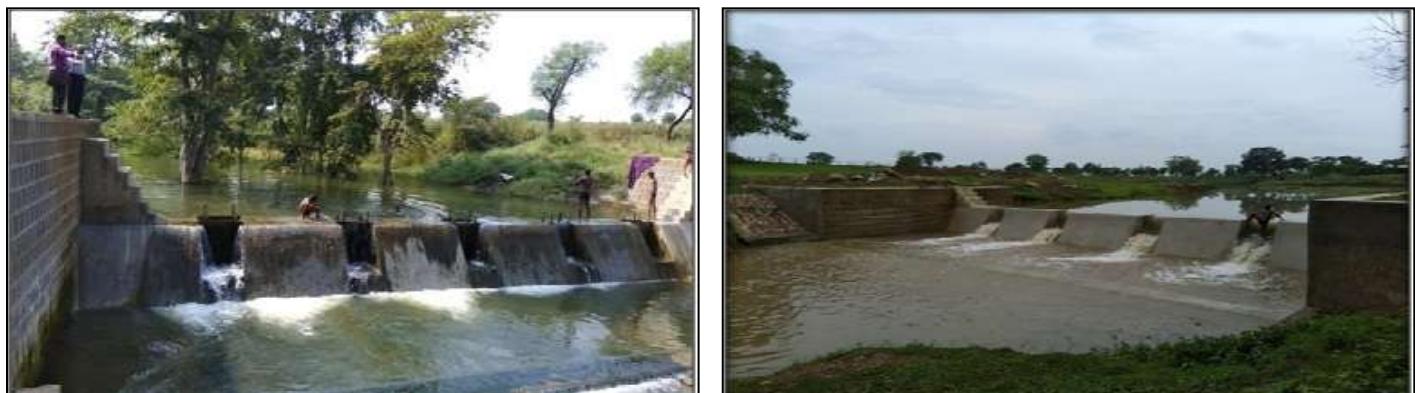


Figure No. 05 and 06 Check Dam

**वृक्षारोपण:**— (संख्या—01, IWMP—4.05 लाख एवं MGNREGA—5.95 लाख कुल लागत 10.00 लाख) वाटरशेड एरिया के गांगपुर (ब) ग्राम में 02 हेक्ट. ऐसे क्षेत्रफल जहाँ वर्षाकाल में जलभराव के कारण खेती इत्यादि का कोई कार्य किया जाना संभव नहीं हो पा रहा था, वहाँ पौधारोपण हेतु जलग्रहण समिति द्वारा निर्णय लिया गया। इस क्षेत्र से लगे हुए एक तालाब जिसका वर्षाकाल में अपवाहित जल के कारण जलप्लावन हो जाता था इसे एक निश्चित दिशा देकर पौण्डिंग एरिया का निर्माण किया गया, साथ—साथ 2 हजार पौधों (फलदार व इमारति) का रोपण किया गया। इन पौधों को जीवीत रखने के लिए पौण्डिंग एरिया में एकत्रित जल से सिंचाई के सुविधा विद्युत पम्प से सुनिश्चित कि गयी तथा इस पौधारोपण क्षेत्र में फेंसिंग की व्यवस्था की गयी, परिणामस्वरूप सभी 2000 पौधे जीवित हैं।



**Figure No. 07-10** Fig.7. Plantation, Fig.8. SHGs working near plantation, Fig. 9. Percolation Tank, Fig. 10. Arhar Plantation

इस वृक्षारोपण की सुरक्षा हेतु ग्राम के महिला कृषकों के द्वारा एक समूह तैयार किया गया जिससे वृक्षारोपण क्षेत्र को सौंपा गया। वर्तमान में चूंकि वृक्षों की कैनोपी अभी कम हैं, पौधों के बीच की जगह को सब्जियों की खेती के लिए उपयोग किया जा रहा है। इस हेतु कृषि विभाग के आत्मा योजना अंतर्गत राशि 10000 रुपये के चक्रीय फण्ड का उपयोग किया गया, इस समूह द्वारा लगभग 9000 रुपये का सब्जी विक्रय कर समूह के खाते में जमा किया गया। वर्तमान में समूह

द्वारा आमदनी को बढ़ाने के उद्देश्य से परकोलेशन टैक व पौण्डिंग एरिया के मेड़ पर अरहर की फसल लगाई गयी है।

2. उपरोक्त कार्यों के अलावा भूमि के कटाव रोकने हेतु 43 गली चेक एवं 07 गेबियन चेक का निर्माण किया गया।



Figure No. 11 and 12 Check Dam and Gabion Creation(During the Process)

3. उत्पादन प्रणाली के अंतर्गत वाटरशेड क्षेत्र मे कृषि विभाग की NFSM एवं BGREI अंतर्गत 100–100 हेक्ट. के कलस्टर में तकनीक का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में चने की फसल को चयनित किया गया। प्रदर्शन के परिणाम के अनुसार चने के उत्पादकता के अनुसार 20 विव./ हेक्ट. प्राप्त है।

---000---